SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"भारत–रूस रक्षा सहयोग का बदलता स्वरूप : एक विश्लेषण"

निधि वर्मा
एवं
प्रो0 अरविन्द कुमार चर्तुवेदी

सारांश

भारत और रूस के बीच रक्षा साझेदारी में एक उन्नत हथियारों की आपूर्ति, सैन्य तकनीकी सहयोग और हथियारों के संयुक्त विकास के अधिग्रहण के माध्यम से नई क्षमताऐं हासिल की है। भारत की सैन्य आधुनिकीकरण की खोज में रूस ने निःसंदेह एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोवियत संघ के पतन का विशेष रूप से भारत दूरगामी प्रभाव था जिसमें तब तक एक सोवियत केन्द्रित रक्षा प्राप्ति नीति अपनाई थी और विशेष रूप से रक्षा उन्नयन के लिए सोवियत संघ पर निर्भर था सन् 2000 में 'द्विपक्षीय सामरिक सहयोग' समझौते की घोषणा के पश्चात् भारत रूस द्विपक्षीय सम्बन्ध का प्रारम्भ हुआ। इस संधि का मुख्य उद्देश्य सोवियत विघटन के पश्चात् द्विपक्षीय सम्बन्धों में उभरे अंतर को पूर्ण करने का था हालांकि दोनो राष्ट्रो के मध्य रक्षा सहयोग चुनौतियों के बिना नही है। विशेष रूप से वर्तमान चीन–रूस रक्षा सहयोग और भारत के रक्षा बाजार के विविधिकरण की स्थिति को देखते हुए। भारत रूस के मध्य पिछले 20 वर्षों के सामरिक सम्बन्धों ने भीतर और बाह्य कारको की चुनौतियों को देखते हुए कई परीक्षणों का सामना किया।

संकेत :–

सामरिक समझौते, सहयोग, सैन्य तकनीकी, संयुक्त उत्पादन, चीन, अमेरिका

प्रस्तावना :–

03 अक्टूबर सन् 2000 को रणनीति, साझेदारी की घोषणा पर हस्ताक्षर के पश्चात भारत और रूस ने 2020 में 20 वर्षो की सामरिक साझेदारी का आयोजन किया पिछले दो दशको में इस रक्षा साझेदारी के कारण उन्नत हथियारों के संयुक्त विकास के अधिग्रहण के माध्यम से नई क्षमताऐं हासिल की गयी है। भारत की सैन्य आधुनिकरण के लिए रूस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है हालांकि की कोई कारणों की वजह से भारत और

रूस के मध्य रक्षा सहयोग में कमी आई है। वर्ष 2000 के पश्चात् से भारत रूस सामरिक सम्बन्धों में इन रूझानो को देखते हुए यह रक्षा सहयोग में वर्तमान और भविष्य के जुड़ाव के विश्लेषण करने का एक उपयुक्त समय है।

रक्षा सहयोग भारत रूस रणनीतिक साझेदारी का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। यह दोनो राष्ट्रों के मध्य हस्ताक्षरित सैन्य तकनीकी सहयोग कार्यक्रम द्वारा निर्देशित है। जो वर्तमान समय में 2020 तक वैध था। आयुध प्रणालियों एवं विभिन्न सैन्य उपकरणों का उत्पादन और बिक्री के पश्चात् समर्थन, दोनो पक्ष समय–समय पर सशस्त्र बलों के कर्मियों का आदान प्रदान और सैन्य अभ्यास भी करते है। 2008 में उच्च स्तरीय निगरानी समिति (HLMC) नामक एक उच्च स्तरीय समिति की स्थापना की गयी थी जिसमें भारत गणराज्य के रक्षा मंत्रालय से रक्षा सचिव और रूसी संघ से सैन्य तकनीकी सहयोग के लिए संघीय सेवा (FSMTC) के निर्देशक शामिल थे।

रूस ने विशेष रूप से सोवियत संघ के समय भारत के राष्ट्रीय और सुरक्षा हितों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सन् 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष के दौरान रूस ने भारत को राजनीतिक सुरक्षा समर्थन देकर दोनो राष्ट्रों के मध्य जुड़ाव को सुदृढ़ करने में आवश्यक प्रोत्साहन प्रदान किया। सोवियत संघ की रक्षा आपूर्ति में असाधरणतया भारत एक गैर वारसा सदस्य ने सस्ती कीमतो के साथ उन्नत रक्षा उपकरण सुलभता गुणवत्ता वाले हथियारों के साथ आए। सोवियत संघ के विघटन का कई राष्ट्रों पर विशेषकर धारक पर दूरगामी प्रभाव पड़ा जो तब तक एक सोवियत केन्द्रित रक्षा नीति का पालन करता था और रक्षा उन्नयन के विशेष रूप से इसी पर निर्भर था इस अवधि के दौरान भारत की मुश्किले कई गुनाह बढ़ गयी क्योंकि भारत को स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति की तालाश करनी थी सन् 1971 में ''भारत सोवियत मित्रता और सहयोग'' सन्धि का 1993 में नवीनीकरण के बाद भारत सोवियत सन्धि में कई बदलाव किए गए। भारत सोवियत संधि के अनुच्छेद IX की घोषणा के अनुसार किसी बाह्य खतरे के समय रूस और भारत दोनो सैन्य रूप से सहायता करेंगे। भारत रूस में सैन्य तकनीकी सहयोग के मुद्दे की पूरी श्रृंखला की देखरेख के उद्देश्य से नई संस्थागत संरचना भी स्थापित थी भारत रूस अंतर सरकारी सैन्य तकनीकी सहयोग आयोग (IRIGC-MTC) की स्थापना की इसमें सक्रिय परियोजनाओं और अन्य मुद्दों की स्थिति पर चर्चा और समीक्षा करने के लिए दोनो राष्ट्रो के रक्षा मंत्री प्रतिवर्ष बैठक करते है। संयुक्त उत्पादन में दोनो राष्ट्रो के मध्य (MTC) सबसे पहले सफल रहा है। जिसमें भारत के विनिर्माण हथियारों को देखा गया है जैसे – ब्राह्मोस मिसाइलो का संयुक्त उत्पादन, टैंको और विमानों का संयोजन T72M1 टैंक, रेडार, एंटीशिप और एंटी–टैंक मिसाइल आदि शामिल है। इन वर्षों में रूस के सहयोग के साथ भारत में खरीद और संयुक्त विकास के माध्यम से नई क्षमताऐं हासिल की है। जिसमें आई0एन0एस0 विक्रमादित्य का समावेश, स्वयं के लिए आई0एन0एस0 अरिहंत का प्रक्षेपण, एम0आई0जी0 का कमीशन भारतीय नौसेना में 29के0 स्क्वाड्रन 350टी0–905 टैंक और ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रुज मिसाइल का सफल विकास शामिल है। रूस भारत में निर्माण के लिए अपनी प्रौद्योगिकी उपकरण सहायता और व्यापक बनाने पर अपनी सहमति व्यक्त की जो भारतीय परियोजना जैसे 'मेक एन इण्डिया' अभियान का पूरक बना, 2014 के दिसम्बर में भारत रूस के मध्य एक रक्षा समझौता हुआ जिसमें भारत में MI-17 और KA-226T

हेलीकाप्टर की निर्माण के लिए हस्ताक्षर किया इसी समझौते में अधिकतम 400 कामोय हेलीकाप्टर तैयार करने की भी संभावना व्यक्त की गयी है।

15 मई 2015 को भारतीय रक्षा अधिग्रहण समिति (डी0एस0सी0) ने 200 रूसी कामोय के 226 हे 200 रूसी कामोय के 226 हेलीकाप्टर की खरीद को मंजूरी दे दी इस प्रकार रक्षा सहयोग ने इन समझौते और विकासो ने एक सुदृढ़ भारत, रूस, रक्षा सहयोग का संकेत दिया है। दोनो राष्ट्रो 15 अक्टूबर 2016 को हुए 17वें द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन के दैरान कुल 16 समझौते पर हस्ताक्षर किया रक्षा सम्बन्धों ने भारत और रूस परियोजना 11356 के अन्तर्गत चार फ्रिगेट बनाने पर सहमत हुए, एक रूस में और तीन भारत में बनाए जाने है। 31 मई से 2 जून 2017 तक आयोजित 18वें वार्षिक शिखर सम्मेलन रक्षा सहयोग भारत और रूस के बीच सहयोग का एक प्रमुख केन्द्र बिन्दु रहा। कामोव केए0 –226 हेलीकाप्टर और फ्रिगेट के उत्पादन के लिए संयुक्त उद्यमों के बारे में प्रगति का भी उल्लेख किया गया है। रूस की भागीदारी के साथ भारत में उच्च तकनीकी सैन्य उत्पादों की विधान सभा स्थापित की गयी है। हम प्रधानमंत्री के साथ संयुक्त रूप से आधुनिक हथियार प्रणालियों को विकसित करने और निर्माण करने के लिए सहमत है। पुतिन ने कहा सहयोग भारत के लिए नवीनतम रूसी सैन्य उपकरणों की प्रत्यक्ष आपूर्ति तक सीमित नही है। भारत और रूस के मध्य 4–5 अक्टूबर 2018 को 19वीं वार्षिक द्वितीय पक्षीय शिखर बैठक एक उपयुक्त समय पर भी जिससे साझेदारी की एक बार पुनः परीक्षा हुई भारत में हुई संयुक्त राज्य अमेरिका से पड़ी आपत्तियों के बावजूद शिखर सम्मेलन के दौरान रूस से एस0–400 ट्रायम्फ वायु रक्षा प्रणाली खरीदने के लिए 5 विलियन डॉलर के सौदे पर हस्ताक्षर किया इस समझौते पर हस्ताक्षर कर भारत ने अपनी सामरिक स्वायतता का प्रदर्शन किया भारत और रूस 2018 में उ0प्र0 राज्य के अमेठी में 2019 में AK-203/103 राइफल बनाने के लिए संयुक्त परियोजना शुरू करने पर सहमति व्यक्त की दोनो राष्ट्रो ने 28 नवम्बर 2018 को उ0प्र0 के झांसी में भारत के बबीना सैन्य स्टेशन पर 10वें इन्द्रा संयुक्त अभ्यास का समापन किया भारतीय सशस्त्र बालों की 75 सदस्यीय त्रि सेवा टुकड़ी ने 17 जून 2020 को रूस में 75वीं वर्षगांठ विजय दिवस परेड में भाग लिया पिछले 20 वर्षो में भारत और रूस के मध्य रक्षा सहयोग के आधार पर यह कहा जा सकता है कि साझेदारी परस्पर हितों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रही है। भारत और रूस के मध्य रक्षा सहयोग में उभरती प्रवृत्तियों में से एक रक्षा बाजारों का विविधीकरण है। भारत में अपनी रक्षा खरीदकर योजना में विविधता ला दी है जिसके कारण अमेरिका के साथ एक रक्षा व्यापार सम्बन्ध और व्यापक सुरक्षा जुड़ाव देखने को मिला है। वर्तमान में अमेरिका के साथ भारत की रक्षा भागेदारी महत्वपूर्ण रक्षा और रणनीति समझौतो के साथ $ 20 विलियन की है। जिसमें लॉजिस्टिक एक्सचेन्ज मेमोरेन्डम ऑफ एग्रीमेंट, संचार, संगतता और सुरक्षा समझौता, बेसिक एक्सचेन्ज एण्ड कोऑपरेशन एग्रीमेंट और औद्योगिक सुरक्षा समझौता शामिल है। दोनो राष्ट्रो के मध्य बढ़ते रक्षा समझौतो को देखते हुए 2016 में अमेरिका ने भारत को एक प्रमुख रक्षा भागीदार नामित किया नवम्बर 2019 दोनो राष्ट्रो ने टाइगर ट्रायम्फ, और पहली त्रिकोणीय सेवा अभ्यास किया दूसरी तरफ रूस अपनी रक्षा औद्योगिक परिसर को बनाए रखने और वैश्विक हथियार की बढ़ती सम्भावनाओं को पूरा करने के लिए रक्षा बाजारो के भौगोलिक विविधिकरण की सम्भावनाओं की खोज कर रहा है।

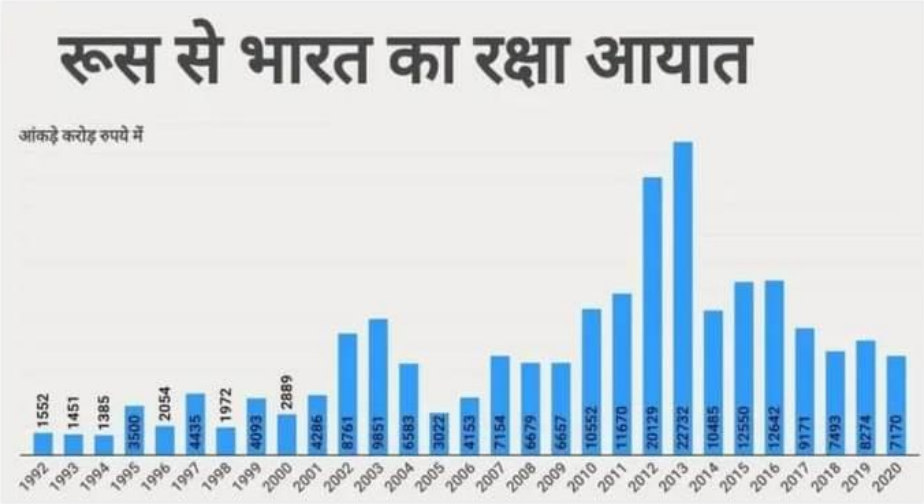

निष्कर्ष :–

भारत रूस रक्षा सम्बन्धों के हाल के वर्षो में एक उतार चढ़ाव देखा गया परन्तु आम तौर पर दिखाई देने की तुलना में कम अस्थिर रहा है। भारत रूस को न केवल महत्वपूर्ण मुद्दों पर भारत के समर्थन के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में देखता है। बल्कि इसलिए भी की रूस अन्य रक्षा आपूर्ति करने वाले देशों की तुलना में प्रौद्योगिकीय साझा करने के लिए अधिक इच्छुक है। संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद रूस दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार निर्यातक है। हथियारों के हस्तान्तरण के मामले में रूस के लिए भारत सबसे बड़ा आयतक है। वर्ष 2000 और 2020 के मध्य रूस भारत को हथियारों के आयात के 66.5 प्रतिशत हिस्सों के लिए उत्तरदायी है। वर्तमान में निर्धारित योजना के अनुसार वर्ष 2021 के मध्य से रूस द्वारा भारत को S-400 मिशाइल रक्षा प्रणाली की आपूर्ति प्रारम्भ की जानी है। और रक्षा क्षेत्र में भारत रूस सहयोग को 'मेक इन इण्डिया' पहल से जोड़कर द्विपक्षीय सम्बन्धों को नई ऊर्जा दी जा सकती है।

संदर्भ :–

1. Embassy of India, Moscow, Russia
2. अरूण मोहंती, भारत–रूस मित्रता संधि और इसकी विरासत, मुख्य धारा, खण्ड XLIX संख्या 38, 10 सिंतबर 2011
3. भारत रूस रक्षा सहयोग, भारतीय दूतावास, मास्को रूस,
4. बोरिस एगोरोव, ''रूस की हथियार निर्यात के लिए नए बाजारो की तालाश भारत अभी भी सर्वप्रथम आयतक'' रशिया एवं इण्डिया रिपोर्ट 23 मई 2023
5. एड्रे रेचीचिकोव, बजग्लयाड, मिखाइल, मोशफिन ''बड़े सौदे में भारत भी हेलिकॉप्टर खरीदेगा, रशिया और इण्डिया रिपोर्ट, 15 मई 2015
6. विनय शुक्ला ''भारत रूस सम्बन्ध नए विकास पथ पर'', भारत सामरिक जून 2017
7. द्विपक्षीय सम्बन्ध : भारत रूस सम्बन्ध, भारत दूतावास, मास्को, रूस

8. भारत मास्को में WWII की 75वीं विजय दिवस परेड में भाग लेने के लिए त्रिसेवा दल भेजेगा, दूरदर्शन समाचार, 17 जून 2020
9. भारत के साथ अमेरिकी सुरक्षा सहयोग, फैक्ट, शीट, ब्यूरो ऑफ पॉलीटिकल, मिलिट्री अफेयर्स, अमेरिकी डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट, 21 जुलाई 2020
10. विकीपीडिया

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/28

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

निधि वर्मा एवं प्रो0 अरविन्द कुमार चर्तुवेदी

For publication of research paper title

"भारत–रूस रक्षा सहयोग का बदलता स्वरूप : एक विश्लेषण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com